ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 228-231**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

कोरोना काल मे स्थाननातरित मजदूरों का लघु तथा कुटीर उधोग के विकास मे योगदान

1. स्वाती कुमारी
2. आभा पाठक

1. Research Scholar, Department of Geography, Magadh University 2. Assistant Professor, Department of Geography, Gaya College, Gaya (Bihar) India

Received-15.06.2025, Revised-22.06.2025, Accepted-27.06.2025 E-mail : aaryvart2013@gmail.com

सारांशः शहरीकरण एक ऐसा विशिष्ट कारण है जो प्रवासी मजदूरों को अपनी आजीविका के लिए प्रवास करने पर मजबूर भी करती है तथा भौतिक सुख सुविधाओं के लिए अपनी तरफ आकर्षित भी करती है किंतु, करोना काल में जो देशव्यापी तालाबंदी की गई उससे सर्वाधिक नुकसान प्रवासी मजदूरों को भुगतते देखा गया, जिससे मजदूर पलायन करने पर विवश हो गए। बिहार के लगभग सभी जिलों में यह प्रवासी मजदूर पैदल अध–नंगे ,फटे पुराने कपड़े, भूख से बेहाल बसों ट्रकों में भर भर कर दूसरे राज्यों से आते देखा गया जिनका कोई भी सरकारी डाटा सही–रूप कही उपलब्ध नहीं है । हमारे अध्ययन क्षेत्र की भी सामान्य स्थिति रही है मजदूरों के पलायन तथा गांव लौटने पर पुनः इस बीमारी की भयानकता से बचने के लिए जो मजदूर जिले में फैले विभिन्न तरह के लघु तथा कुटीर उद्योग में लग गए, यहां इस शोधपत्र में उन्हीं प्रवासी मजदूरों के कार्य उनके कार्यों से पारिवारिक भरण–पोषण की स्थिति साथ में, जिले के विकास में क्या योगदान है, इस पर प्रकाश डालने का कार्य किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– प्रवासी मजदूर, आजीविका, प्रवास, लघु तथा कुटीर उद्योग, पारिवारिक भरण–पोषण

बिहार राज्य में कोरोना वायरस से पूर्व भी यहां के कम पढ़े–लिखे बेरोजगार आर्थिक तंगी से जूझ रहे परिवार लोग बरसों से दिल्ली, कोलकाता, मुंबई ,सूरत जैसे बड़े शहरों में रोजी–रोटी कमाने जाते रहे हैं पलायन मजदूरों में ज्यादातर मजदूर ऐसे ही बिना कहीं नाम दर्ज करवाएं झोला–बैग उठाकर कमाने चल देते हैं ऐसे मजदूरों का बिहार सरकार के पास कोई वास्तविक पता नहीं रहता, ना ही कोई डाटा उपलब्ध 100 में शायद 10 ही ऐसे मजदूर होंगे जो अपना रजिस्ट्रेशन करवा करके जाते हैं । 2020 में अन्य देशों से होते हुए करोना माहमारी भारत के बड़े–बड़े शहरों में अपना पैर पसारने लगा तब सरकार के द्वारा लॉकडाउन लगाया गया था और सोशल डिस्टेंसिंग को पालन करने के लिए कहा गया था जिसके लिए बड़ी –बड़ी फैक्ट्री कंपनी सब को बंद करना पड़ा यहां तक कि छोटे–मोटे काम धंधे के दुकान चाय–पानी रिक्शा, ठेला सब चलना बंद हो गया ऐसे में बिहारी मजदूरों को काम मिलना बंद हो गया काम बंद होने से इनकी आमदनी खत्म हो गई उस समय पूरे देश में लॉकडाउन लगा हुआ था । प्रवासी मजदूर पैदल साइकिल जो ठेला शहर में चलाते थे उसी को लेकर ट्रकों में छुप कर अपने अपने घर को निकल पड़े उस समय इन मजदूरों को ना करोना का डर था ना ही, इतनी लंबी दूरी दिखाई दे रही थी रात–दिन एक–करके या मजदूर वर्ग अपने गांव लौट आए बिहार के लगभग सभी जिलों में यह प्रवासी मजदूर पैदल अध–नंगे फटे पुराने कपड़े, भूख से बेहाल बसों ट्रकों में भर–भर कर दूसरे राज्यों से आते देखा गया इनमें से जो नवयुवक–वर्ग थे वह करोना महामारी खत्म होते पुनरू शहर की तरह पलायन कर गए किंतु, बहुत से लोग बीमारी फिर से ना आ जाए और वही सब न झेलना पड़े इसलिए गांव में ही रुक गया और अपने ही शहर अपने ही शहर में काम ढूंढ लिए।

अध्ययन क्षेत्र– मुजफ्फरपुर जिले का निर्माण सन 1875 ईस्वी में प्रशासनिक सुविधा के लिए बनाया गया था, जिसका नाम ब्रिटिश काल के राजस्व अधिकारी मुजफ्फर खान के नाम पर पड़ा है । अध्ययन क्षेत्र मुजफ्फरपुर जिले उतरी बिहार राज्य का एक प्रमुख जिला हैं, जो बूढ़ी गंडक नदी के तट पर बसा हुआ है जिले का अक्षांशीय तथा देशांतरीय विस्तार है 26°7'21.43 उतर से 85°22'47.89" पूरब है तथा जिला का कुल क्षेत्रफल 3,172किलोमीटर है, यह दो अनुमंडल मे बटॉ हुआ है, पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों अनुमंडल दोनों को मिलाकर के कुल 16 ब्लॉक हैं । समुद्र तल से औसत ऊंचाई 170 मीटर है। जिले की चौहद्दी देखे तो मुजफ्फरपुर के पूर्वी भाग में दरभंगा समस्तीपुर जिला है, तथा पश्चिमी भाग में सारण और गोपालगंज जिला है उत्तर में सीतामढ़ी पूर्वी चंपारण और दक्षिण में वैशाली तथा सारण जिला अवस्थित है। मुजफ्फरपुर जिले की जलवायु उपोष्णकटिबंधीय है जो लीची की फसल के लिए काफी अच्छा होता है यहां के लीची के उत्कृष्ट स्वाद के लिए देश–विदेश में भी काफी विख्यात है। गर्मियों में यहां पर औसत तापमान लगभग 44 डिग्री सेंटीग्रेड तक चला जाता है तथा ठंडी में 5 डिग्री सेल्सियस तक हो जाती है औसत वार्षिक वर्षा 118.7 मिलीमीटर तक होती है।

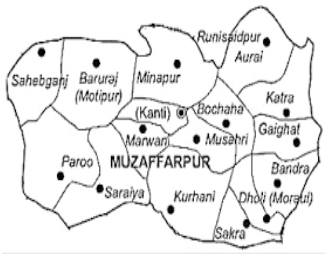

Map of Muzaffarpur District

2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 4801062 है तथा प्रति व्यक्ति वर्ग किलोमीटर निवास करते हैं जिले में प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की स्थिति 900 है। साक्षरता दर 65.50: है मुजफ्फरपुर जिला बूढ़ी गंडक नदी के किनारे बसा हुआ है । गंडक नदी सोमेश्वर की पहाड़ी से निकलती है, तथा इस नदी में प्रतिवर्ष बाढ़ आती है नदिओं तटवर्ती क्षेत्रों में नवीन खादर मिट्टी की प्रचुरता है यहां पर गेहूं और चावल की अच्छी पैदावार होती है जिले की आर्थिक निर्भरता लगभग 55: कृषि व्यवसाय के ऊपर आश्रित है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र मुजफ्फरपुर जिले में कोरोना महामारी में अन्य राज्यों से मुजफ्फरपुर लौटे वैसे स्थाननातरित मजदूरों, श्रमिक जो पुनः कहीं दूसरे राज्यों में ना जाकर अपने ही जिले में रोजगार तलाश लिए हैं, वर्तमान में वह कौन– कौन से कार्य में लगे हुए हैं , साथ ही उनकी आमदनी के स्रोत और मासिक वेतन का आंकड़ा पता करना और उससे जिला के विकास में क्या योगदान है यह भी विश्लेषण करना।

विधितंत्र– प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक विधि तंत्र का प्रयोग करते हुए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों तरफ से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है प्राथमिक स्तर का आकड़ा जिले के प्रमुख औ ोगिक इकाइयों में भ्रमण करके वहां कार्यरत स्थाननातरित मजदूरों से साक्षात्कार विधि द्वारा आंकड़ा एकत्र किया गया है तथा द्वितीयक आंकड़े प्रभात खबर, हिंदुस्तान समाचार पत्र तथा मुजफ्फरपुर विकिपीडिया से लिया गया है ,साथ ही कूछ शोधपत्र से भी जानकारी ली गई है जो कोरोना महामारी के प्रभाव ऊपर लिखित है।

विश्लेषण तथा व्याख्या– 2011 की जनगणना रिपोर्ट बताती है कि पूरे भारत में उत्तर प्रदेश तथा बिहार आंतरिक प्रवास में एक नंबर पर है । यहां पर लगभग 30: प्रवासी मजदूरों की संख्या में वृद्धि हुई है और यह संख्या दिनों –दिन बढ़ती जा रही है । बिहार में अन्य जिलों से वापसी किए स्थाननातरित मजदूरों में रजिस्टर्ड मजदूरों की सर्वाधिक संख्या उत्तर बिहार के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की है, हमारा शोध क्षेत्र मुजफ्फरपुर भी इन्हीं में से एक है ,जहां पर अधिकतम अनुमानित स्थाननातरित मजदूर 1.94 लाख देखे गए रजिस्टर्ड मजदूरों की संख्या संख्या 57774 है लेकिन ,मजदूरों की अनुमानित संख्या 197764 है।

क्रम संख्या	जिला का नाम	पंजीकृत श्रमिक*	अनुमान पंजीकृत श्रमिक
01	मुजफ्फरपुर	57775	197760
02	वैशाली	27486	56002
03	मधुबनी	42340	95004
04	किशनगंज	39244	56321
05	बेगूसराय	33784	37921

स्रोतः (आपदा प्रबंधन विभाग)

दिखाए गए आंकड़ों से स्पष्ट है कि उत्तरी बिहार में सर्वाधिक प्रवासी रजिस्टर्ड मजदूर मुजफ्फरपुर जिले में है तथा इनकी अनुमानित संख्या भी सर्वाधिक हैं, और सभी जिलों की अपेक्षा इसमें वैशाली दूसरे स्थान पर मधुबनी तीसरे तथा किशनगंज और बेगूसराय चौथे और पांचवें स्थान पर आते हैं।

कोरोना महामारी में लौटे मजदूरों को तुरंत से काम दिलाना सरकार के सामने भी एक बहुत बड़ी चुनौती थी क्योंकि इनकी संख्या ज्यादा थी जैसे–जैसे सरकार के तरफ से लॉकडाउन खत्म किया गया जो भी क्रियाकलाप है उसको सुचारू ढंग से चालू किया गया जिसके बाद से यह लोग विभिन्न तरह के क्रियाकलाप में लग गए हैं, फैक्ट्री में काम करने के आलवा रोजना बेसिस पे काम करने वाले मजदूर आपको पक्की–सराय चौक,जेल चौक, मिठनपुरा, हाथी चौक आदि के पास हर सुबह गांव से आए मजदूर इकट्ठा होकर खड़े मिलेंगे शहर में रहने वाले बड़े लोग जिनका अपना घर का काम है या दुकान का काम जैसे पर्व त्यौहार में घर की रंगाई पुताई करना, साफ सफाई करवाना दुकान तैयार करना, कचरा साफ करवाना, शादी ब्याह कार्यक्रम में सजावट खान–पान का ध्यान रखना किसी अन तरीके के कारण होते हैं करवाने के लिए इनको 400 –500 / रेट 1 दिन पर ले जाते हैं।.

- मुजफ्फरपुर जिला बज्जीकांचल क्षेत्र का प्रमुख औ ोगिक क्षेत्र है, जो उत्तर बिहार का मैनचेस्टर कहा जाता है। यहां पर फैले लघु तथा कुटीर उद्योग लाखों लोगों के आजीविका का प्रमुख साधन है ।

शहर के कुछ प्रमुख औ ोगिक क्षेत्र जगह निम्नलिखित हैं–

बेला औ ोगिक क्षेत्रः बेला मुजफ्फरपुर का काफी प्रसिद्ध तथा पुराना औ ोगिक क्षेत्र है यहां पर विभिन्न तरह के पैकेजिंग का सामान जैसे मैगी, बिस्कुट, टॉफी, पापड़, अचार, कुरकुरे, चिप्स ,अगरबत्ती आदि कई तरह के सामान की पैकेजिंग की जाती है इसके अलावा यहां पर प्लास्टिक, कार्टून, स्टील, कचरे वगैरह आदि जमा करके रीसाइक्लिंग का काम होता है ,डब्बा तैयार किया जाता है तथा विभिन्न तरह के होता है ।

जुड़न छपराः यहां पर शहर के बड़े–बड़े डॉक्टर के क्लिनिक खुले हुए हैं यहां पर खून जांच,एक्सरे–मशीन सीटी–स्कैन आदि सब यहां पर होता है ।

मिठनपुराः दो बड़े बड़े मॉल खुले हुए हैं जिसमें खाने–पीने से लेकर पहनने, सिनेमा हॉल आदि खुले हुए हैं रेस्टूडेंट खाने–पीने की सभी सामग्री ,कोचिंग संस्थान भी है जो बैंकिंग एसएसी आदि की तैयारी करवाती है जिससे महिंद्रा कोचिंग सेंटर काफी प्रमुख है।

इस्लामपुरः काफी समय से यह श्रेत्र कांच की रंग–बिरंगी चूड़िया बनाने के लिए प्रसिद्ध है।

जवाहरलाल रोड : घर के सारे में इलेक्ट्रॉनिक सामान आपको यहां पर मिल जाएंगे मोटरसाइकिल के टायर और उसके उस जुड़ी हुई सारे पार्ट पुर्जा, सीट वगैरह सब यहां पर बनाए जाते हैं।

मोतीझीलः यहां पर गारमेंट, होजीयरि ,फैंसी डिज़ाइनर कपड़े, सैंडल, जूता, चप्पल, मोबाइल आदि का शोरूम यहां पर है खालसा ड्रेसेस यहां के प्रमुख दुकान है।

सूतापट्टीः सूती वस्त्र थोक भाव में यहां पर मिलता है.

इन सभी औ ोगिक क्षेत्रों के अलावा मुजफ्फरपुर में आम गोला (राशन की सामग्री, भोजपत्र, पूजा सामग्री) तथा सरैयागंज टावर, कंपनी–बाग (सभी तरह के पुराने कपड़े, फल वगैरा) क्लब रोड आदि ऐसे जगह आपको दिख जाएंगे जहां शहरों से वापस आए हुए प्रवासी मजदूर इस तरह के कार्य में लगे हुए है।

- प्रतिदिन रोजाना बेसिक पर कमाने वाले मजदूरों के अलावा कुछ ऐसे भी प्रवासी मजदूर है जो गांव में लगे छोटे–मोटे कुटीर उद्योग में जो उनके पूर्वज पारंपरिक ढंग से करते आ रहे हैं उन्हें भी लग गए हैं उनको हमने इस प्रकार से तैयार किया है.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

मछली पालनः मछली पालन नदी के किनारे, छोटे–छोटे मन (तालाबों) में करते है ,शाम के समय में आसपास के बाजारों में बेच कर घर का खर्च चलते हैं ।

कुम्हार मिट्टीः कुम्हार मिट्टी पका कर दीप, सुराही ,हाथी, रंग बिरंगे खिलौने, गुल्लक, सामा चकेवा तथा मूर्तियों आदि को तैयार करते हैं और उचित दामों में ग्रामीण परिवेश में ही यह लोग बेचते हैं. इस काम में औरते सहयोग करत है।

चमड़े की बनी वस्तुएं– चप्पल ,जूता ,बैग ,बेल्ट आदि तैयार करके शहरों में बेचते हैं.

लाख की चूड़ी– लाख की चूड़ी तैयार करना वापस आए मजदूर 4,5 मिलकर के कच्चा माल शहर से लाकर के गांव कस्बों में दुकान खोल करके चूड़ी बनाते रहते हैं।

इसके अलावा छोटे–छोटे चॉकलेट बिस्कुट आइसक्रीम दुकान और मजदूरी करना, मुर्गी फार्म , दूध उत्पादन आदि की उसके बाद में बच्चे लोगों को ट्यूशन पढ़ाना, टेंपो चालक लग गए हैं।

व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर और दुकानदारो ,टेंपो चालक औद्योगिक क्षेत्र क्रियाकलाप में प्रवासी मजदूर आदि से पूछताछ करके हमने कुछ डाटा तैयार किया है जो निम्नलिखित है–

क्रम संख्या	प्रवासीमजदूरका कार्य	जिला में प्रप्त आय प्रतिदिन के हिसाब से	बड़े शहरों में प्रप्त आय प्रतिदिन के हिसाब से	शिक्षा	घर से कार्यस्थल कि दुरी
01	गार्डिंग का काम (मॉल, सिनेमा घर, डॉक्टर क्लिनिक,	300-400 रुपया	500-700 रुपया	9th-10th	10-15 कि.मी.
02	पैकेजिंग का काम(बेला औद्योगिक क्षेत्र	200-300 रुपया	300-500 रुपया	9th-10th	15-20 कि.मी.
03	टेलर का काम (मोतीझील, सूतापट्टी)	400-500 रुपया	500-1000 रुपया	9th-10th	15-20 कि.मी.
04	साफ सफाई का काम (मॉल, सिनेमा घर, डॉक्टर क्लिनिक,	300-400 रुपया	500-400 रुपया	9th-10th	8-10कि.मी.
05	राजमिस्त्री का काम	500-700 रुपया	800-1000 रुपया	9th-10th	10-20कि.मी.
06	मजदूरी का काम	200-300 रुपया	400-500 रुपया	9th-10th	10-15कि.मी.
07	बिजली का काम (मॉल, सिनेमा घर, डॉक्टर क्लिनिक,	500-700 रुपया	800-1000 रुपया	10th-12th	10-20कि.मी.
08	टेंपो चालक	200-300 रुपया	500-700 रुपया	9th-10th	10-25कि.मी.

उपर्युक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि मुजफ्फरपुर जिले में इनकी आमदनी प्रतिदिन के हिसाब से कम होती है, दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे बड़े शहरों की अपेक्षा उन लोगों को वहां पर 20,000 से 21000 औसतन मजदूरी बनती है प्रवासी मजदूरों की शिक्षा की बात करें तो इनमें कोई भी हायर एजुकेशन से संबंध नहीं रखते हैं जैसा कि आंकड़ों से स्पष्ट हैं यही कोई 9 से 12 पास है।

शहरों की आमदनी पर मजदूर बताते हैं कि वहां के फैक्ट्री दिन रात चलते रहते हैं,जिसमें आप चाहे तो ओवरटाइम करके भी अपनी आमदनी को बढ़ा सकते हैं। दिन की शिफ्टिंग से ज्यादा पैसे रात की शिफ्ट से मिलता है, हम लोग ज्यादा पढ़े लिखे नहीं हैं इसलिए जो भी काम में अच्छा पैसा बनता है कर लेतेहैं।

कार्यरत स्थाननातरित मजदूरों से बात–चित करने पर उन्लोगो ने बताया बड़े शहरों में इन मजदूरों को ज्यादा मासिक आय प्राप्त होती है मुजफ्फरपुर शहर के मुकाबले किंतु, इन लोगों का कहना है कि बड़े शहर बड़ा खर्च वहां हम लोगों को पानी भी खरीदकर पीना पड़ता है, रहने का पैसा लगता यहां तो अपना घर है 10 से 20 किलोमीटर साइकिल चलाकर आ जाते हैं अपना खाना पीना लेकर शाम को काम कर के मालिक से पैसा लेकर घर की जरूरत की चीज खरीद कर अपने घर 7रू00–0.8 बजे तक पहुंच जाते हैं। यहां पर कार्यरत श्रमिक हैं और इनके घर से कार्यस्थल की दूरी जो मुजफ्फरपुर का मुख्य शहर है वह लगभग 10 से 20 किलोमीटर के अंतर्गत एरिया के जितने भी ग्रामीण परिवेश हैं उनसे यहां पर श्रमिक आकर के कार्य करते हैं। लोग संतुष्ट हैं और यह मांग करते हैं कि सरकार यहां पर कुछ अगर फैक्ट्रियां खोल देती है, जिसमें हम लोग काम करें तो हम लोगों को परिवार को छोड़कर के बाहर नहीं जाना पड़ेगा हम लोग अपने ही जिले में काम कर लिया करेंगे।

सुझाव– हम जानते हैं कि मुजफ्फरपुर जिला मुख्य रूप से कृषि प्रधान जिला है यहां पर खरीफ और रबी दोनों सीजन की फसल की अच्छी पैदावार होती है प्रवासी मजदूरों को उन्नत साधन बीज आदि सहायता मुहैया खड़ा करके उन्हें अपने ही राज्यों में काम देने की आवश्यकता है तथा यहां पर लघु और कुटीर उद्योगों को भी विभिन्न प्रोत्साहन राशि देकर के लगाने की जरूरत है कृषि आधारित कुटीर उद्योग लगाकर भी आय के साधन बढ़ाने में मदद हो सकती है साथ ही अन्य राज्यों से प्रवास करने पर रोक लग सकती है

एक कहावत है "घर में मिले माखन तो बाहर क्यों जाए नंदलाल" वही बात है अपना परिवार सबको प्यारा होता है किंतु उन परिवार की आर्थिक स्थिति, सुखी पूर्वक जीवन व्यतीत हो के लिए लोग एक जगह से दूसरे जगह पर कमाने जाने को मजबूर हैं ।

स्थाननातरित मजदूरों को प्रवास करने से किस प्रकार से रोका जाए इसके बारे में कुछ सुझाव गए हैरू

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

1) कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन राशि सीधे उनके श्रमिक के खाते में पहुंचा ना उनको व्यापार के लिए प्रोत्साहित करना ।
2) बेला औद्योगिक क्षेत्र का जीर्णोद्धार करना पुराने मशीन की जगह नए मशीन लगाना सड़कों की मरम्मत करना तथा आवागमन के साधन को दुरुस्त करना ।
3) कृषि व्यवसाय में उन लोगों को प्रोत्साहित करना जिनको उन्नत बीज कृषि से जुड़े मशीन से अवगत कराना ।
4) जिनकी पढ़ाई घर की आर्थिक स्थिति की वजह से छूट जा रही है उन सभी लड़कों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करना
5) टेक्नोलॉजीकी जानकारी गांव–गांव में घूमकर श्रमिकों को देना तथा 10 श्रमिकों का समूह बनाकर उन लोगों को उद्योग या जिनमें उनकी रूचि हो उसके साधन मुहैया करवाना ।

उपर्युक्त सुझाव तथा विश्लेषण से तात्पर्य है कि हमारे शोध क्षेत्र में जो प्रतिवर्ष श्रमिक वर्ग अन्य बड़े शहरों में कमाने जाने को मजबूर है, उनको किस प्रकार से रोका जाए इसके बारे में बताया गया है जैसे बिहार सरकार स्त्री शिक्षा के लिए बढ़ावा देने के लिए मुख्य शिक्षा के साथ प्रोत्साहन राशि भी मुहैया करवाती है वैसे ही जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर है उनके लड़कों को भी अगर मुफ्त शिक्षा का प्रबंध करें तो इस तरह उनका स्किल डेवलप होगा और किसी भी जानकारी को प्रचार–प्रसार करने में आसानी होगी जिस प्रकार हम अपने बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए उनके पसंदीदा विषय चुनने को कहते हैं उनका विकास करने के लिए उसी प्रकार श्रमिकों को भी रुझान का पता करना आवश्यक है, क्योंकि वह किस क्षेत्र में बेहतर कार्य कर सकते हैं उन्हें उसी तरीके के कार्य को प्रदान करना और उसी में उनको लगाना जिससे वह मन से काम कर सके ।

सुझाव के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि अगर बिहार सरकार केंद्र सरकार से मदद लेकर के इस पर ध्यान दें, तो हमारे जिले में जो स्थाननातरित मजदूरों की संख्या आए दिन बढ़ा रहे हैं उनको रोका जा सकता है, और जिला के विकास में योगदान किया जा सकता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिन्हा, एस.पी., और प्रसाद, जे. (1980)। कमजोर वर्गों के लिए विशेष कार्यक्रमरू एक मूल्यांकन (मुसहारी ब्लॉक, जिला मुजफ्फरपुर, बिहार में कार्यक्रमों का एक केस स्टडी)। इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, 35(902–2018–1736), 42–49.
2. मेहियस, एफ., बोलेएर्ट, एम., बाल्टुसन, आर., और सुंदर, एस. (2006)। मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत में आंत के लीशमैनियासिस के रोगी प्रबंधन की लागत। ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड इंटरनेशनल हेल्थ, 11(11), 1715–1724.
3. मिश्रा, वी.एन., राय, पी.के., और मोहन, के. (2014)। रिमोट सेंसिंग का उपयोग कर भूमि परिवर्तन मॉडलर (एलसीएम) पर आधारित भूमि उपयोग परिवर्तन की भविष्यवाणीरू मुजफ्फरपुर (बिहार), भारत का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ़ द ज्योग्राफिकल इंस्टीट्यूट९ जोवन सीविजिक९, एसएएसए, 64(1), 111–127.
4. यादव, आर.पी. (2017)। बिहार में स्मार्ट सिटी की राह में मुजफ्फरपुर के सामने चुनौतियांरू एक भौगोलिक विश्लेषण. सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 7(12)।
5. कुमार, डी., मेहता, आर., यादव, आर., कुमार, एस., और कुमार, एम. (2018)। ढोली क्षेत्र, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत में फिशरीज स्टेटस और फिशर कम्युनिटी की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों पर अध्ययन। जे एंटोमोल जूल स्टड, 6(3), 76–80।
6. कुमार, यू., रमन, आर.के., कुमार, ए., सिंह, डी.के., मुखर्जी, ए., सिंह, जे., और भट्ट, बी.पी. (2020)। ब्टप्क–19 के कारण बिहार में मजदूरों का वापसी प्रवासरू कृषि क्षेत्र में तैनाती की स्थिति और रणनीतियाँ। जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी मोबिलाइज़ेशन एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट, 15(1), 192–200
7. हिंदुस्तान समाचार पत्र।
8. मुजफ्फरपुर विकिपीडिया।

*****